जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भ. महावीर निर्वाणपर्व पर समस्त पाठकों, लेखकों व संवाददाताओं को जैन पथ प्रदर्शक समिति व पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

वर्ष : 28, अंक : 14 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल उच्चकोटि के प्रतिभाशाली साहित्यकार : प्रतिभा पाटील

नई दिल्ली : राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटील ने कहा कि पण्डित रतनचन्द भारिल्ल उच्चकोटी के प्रतिभाशाली साहित्यकार के साथ शांत और सरल व्यक्तित्व के धनी हैं।

श्रीमती पाटील 9 अक्टूबर, रविवार को नई दिल्ली के कुन्दकुन्द भारती भवन में सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के सान्निध्य में आयोजित आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार 2005 के समर्पण समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में बोल रहीं थी। भारतीय संस्कृति, साहित्य और आध्यात्मिक विषय पर दिया जानेवाला यह पुरस्कार इस वर्ष श्री टोडरमल दि. जैन सि.महाविद्यालय के प्राचार्य, जैन पथप्रदर्शक के सम्पादक, जैनागम के मूर्धन्य विद्वान पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर को प्रदान किया गया।

मंचासीन सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य विद्यानन्दजी, पण्डित भारिल्ल एवं महामहिम राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटील

इस अवसर पर आचार्य विद्यानन्दजी ने पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के कृतित्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसीतरह हर व्यक्ति को देश और समाज के हित में सोचते हुये देश की प्रगति में योगदान करना चाहिये, क्योंकि अच्छे संस्कारों के बिना भौतिक प्रगति निरर्थक है, अत: भारिल्लजी की भांति हम सबको नई पीढी को भारतीय संस्कृति से शिक्षित करने की जिम्मेदारी का ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिये। आचार्यश्री ने पण्डित रतनचन्दजी के विद्वत परम्परा को बढ़ानेवाले कार्यों की सराहना करते हुये उन्हें अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

श्रीमती पाटील ने कहा कि हम जन पीडित मानवता की मदद और गरीबी उन्मूलन की बातें करते हैं तो हमें इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि समाज के निर्धन लोगों तक पहुंचाई जानेवाली मदद कहीं गलत कार्यों, दुर्व्यसनों आदि में तो खर्च नहीं हो रही है, अन्यथा सही अर्थों में मदद का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा।

श्रीमती पाटील ने भारिल्लजी को पुरस्कार स्वरूप

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुये राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटील

शॉल, प्रशस्ति-पत्र और एक लाख रुपये का चैक प्रदान करते हुये विश्वास व्यक्त किया कि पण्डितजी के साहित्य और आध्यात्मिक लेखन से नई पीढ़ी में अच्छा सन्देश जायेगा और उन्हें अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन भी मिल सकेगा।

प्रशस्ति में आपको **सिद्धान्तसूरि** की मानद उपाधि प्रदान की गई। प्रशस्ती वाचन करते हुये अ. भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के महामंत्री डॉ. सत्यप्रकाश जैन दिल्ली ने पण्डित भारिल्लजी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। विद्वत्परिषद् के प्रचारमंत्री श्री अखिल बंसल ने माल्यार्पणकर पण्डितजी का सम्मान किया। पुरस्कार समर्पणकर्त्ता श्री पवन जैन (अमेरिका) ने आभार व्यक्त किया।

सम्मानित मनीषी भारिल्लजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि राजनीति में धर्म का समावेश तो हो, पर धर्म में राजनीति का प्रवेश नहीं होना चाहिये; क्योंकि ऐसा होने से धर्म में विकृति आने के साथ जातिवाद और पंथवाद को बढ़ावा मिलता है।

आपने कहा कि सन् 1986 में जब आचार्यश्री का जयपुर प्रवास था, तब उन्होंने अपनी '**जिनपूजन रहस्य**' पुस्तक आचार्य श्री को भेंट की थी। पुस्तक पढकर आचार्य श्री ने इस छोटीसी पुस्तक को '**नोबेल पुरस्कार**' मिलने जैसी पुस्तक बताया था। जिससे प्रेरित होकर यह कृति ढाई लाख की संख्या में समाज के हाथों में पहुँची। भारिल्लजी ने कहा कि मानसिक स्वास्थ से कमजोर व्यक्तियों को आत्मप्रशंसा सुनकर 'मान' होने का भय होना चाहिये।

भारिल्ल परिवार ने एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि में 50 हजार रुपये और जोड़कर साहित्य प्रकाशन की शृंखला को बनाये रखने के लिये न्यास बनाने की घोषणा की। मंगलाचरण डॉ. वीरसागरजी ने किया। श्रीमती सरयू दफ्तरी ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सतीश जैन (आकाशवाणी) ने किया। **- अखिल बंसल**

किशनगढ पंचकल्याणक पत्रिका

किशनगढ पंचकल्याणक पत्रिका

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

12

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

कुछ अनछुए पहलु

महिला मंडल के मंच से आयोजित महावीर जयंती के दो दिवसीय मंगल महोत्सव के प्रारंभ में मंच की संचालिका ज्योत्स्ना जैन ने आज के अध्यक्ष को मंच पर आने का आह्वान करते हुए कहा ह्न ''इस वर्ष हम इस अवसर पर विविध कार्यक्रमों द्वारा भगवान महावीर द्वारा निरूपित उन अनछुए महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे जो आम जनता में अबतक चर्चित ही नहीं हुए। अबतक अधिकांश भगवान महावीर और उनकी अहिंसा विषय पर ही बोला जाता रहा है।

यदि हमें नर से नारायण ही नहीं, बल्कि पशु से परमात्मा बनने की प्रक्रिया जानना है तो भगवान महावीर के जीवन दर्शन को देखना होगा, एतदर्थ उनके दस भव पीछे जाकर हम उनकी सिंह पर्याय की जीवन शैली की कल्पना करें, जब उस सिंह के पंचेन्द्रिय जीवों के प्राणघात किए बिना पेट भरना भी असंभव था; क्योंकि सिंह के प्रकृति से ही न तो ऐसे दाँत होते हैं, जिनसे कि वह घास चबा सके और न ऐसी आँत ही होती है, जिससे कि शाकाहार को पचा सके और उस खूंखार प्राणी को रोज-रोज रोटियाँ कौन दे? इस कारण उदरपोषण के लिए मांसाहार उसकी तो मजबूरी थी।

मांसाहारी पशुओं की मजबूरी की बात तो समझ में आती है, परन्तु यह समझ में नहीं आता कि मनुष्य को ऐसी क्या मजबूरी है जो मांसाहार एवं मांसाहार जैसे अन्य अभक्ष्य पदार्थ खाता है। यह तो प्रकृति से ही शाकाहारी है। किसी कवि ने बहुत अच्छा लिखा है ह्न

मनुज प्रकृति से शाकाहारी, मांस उसे अनुकूल नहीं है।
पशु भी मानव जैसे प्राणी, वे मेवा फल-फूल नहीं है।।

खैर ! मैं तो महावीर भगवान के दस भव पूर्व सिंह पर्याय की बात कह रही हूँ। सिंह जैसी क्रूर पर्याय में आत्मकल्याण के हेतुभूत सद् निमित्तों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती; फिर भी उसकी भली होनहार से आकाशमार्ग में गमन करते हुए दो मुनिराजों ने सिंह को देखा और उसे निकट भव्य जानकर वे उसे संबोधनार्थ नीचे उतरे। उस समय सिंह के मुँह में माँस था, पंजे खून से लथ-पथ थे। सौभाग्य से उसे आकाशमार्ग से उतरते हुए मुनिराजों के दर्शन हुए तथा संबोधन प्राप्त होने से उसका जीवन धन्य हो गया। उसकी आँखों से पश्चाताप की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। उसने आजीवन मांसाहार के त्याग का संकल्प कर लिया। वही जीव आगे चलकर महावीर बना....।''

इसप्रकार भाषणों के प्रवर्तन के पूर्व श्रीमती ज्योत्स्ना ने भगवान महावीर के सिंह की पर्याय से लेकर महावीर तक के जीवनदर्शन का सामान्य परिचय देते हुए घोषणा की कि आगामी दिनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता एवं लघु नाटिका आदि कार्यक्रम होंगे। जिनके विषय होंगे ह्न वस्तुस्वातंत्र्य की सिद्धि में चार अभाव, षट्कारक। वस्तुत: वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त मोक्ष महल की नींव का पत्थर है और मोक्षमार्ग का मूल आधार भी है। इन विषयों से अन्य जन तो अपरिचित हैं ही, भगवान महावीर के अधिकांश अनुयायी भी भलीभाँति परिचित नहीं है, अत: इन विषयों पर आधारित कार्यक्रम रखे गये हैं। **(क्रमश:)**

दशलक्षण समाचार

वाशिंगटन डी.सी. (अमेरिका) : यहाँ डी.सी. जैन समिति और स्वाध्याय मंडल के तत्त्वावधान में सिल्वरस्प्रिंग मेरिलैंड के जैन मन्दिर में पण्डित दिनेशभाई शाह व डॉ. उज्ज्वलाजी शाह, मुम्बई के पंचलब्धी, कार्य-कारण रहस्य, जैन सिद्धान्त प्रवेशिका व जैन भूगोल आदि विषयोंपर मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित श्रोताओं को मिला। आपके सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था श्री अतुलजी खारा, डलास द्वारा की गई। साथ ही जैन सेंटर के अध्यक्ष श्री सुशील जैन व श्री मनोज धरमसी का भी सहयोग प्राप्त हुआ। वाशिंगटन के अतिरिक्त डेलावेएट, न्यूजर्सी, टेनेसी, केंटेकी आदि स्थानों से पधारे साधर्मियों ने उक्त कार्यक्रम का लाभ लिया। **ह्न निरेन नागदा**

खामगाँव (महा.) : यहाँ प्रात: पूजनोपरांत पण्डित चंदनमलजी शाह, नातेपुते के दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र व रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

वापी (गुज.) : यहाँ डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर के प्रात: समयसार तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। सांयकाल छहढ़ाला की कक्षा ली गई, जिसमें अन्तिम दिन ६१ लोगों ने परीक्षा दी। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् पण्डित विक्रान्तजी शाह, सोलापुर के प्रात: प्रवचनसार व रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में करणानुयोग विषयक कक्षा ली गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

खनियाधांना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा के तीनों समय मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

बरूआसागर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित मुरारीलालजी नरवर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर जैन प्रवेशिका व रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा के तीनों समय समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक व दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इस अवसर पर एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया तथा रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न दीपकराज जैन**

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में ब्र. विदुषी कल्पनाबेन, जयपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक व रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त तीनों समय प्रश्नमंच का आयोजन हुआ।

वल्लभनगर (राज.) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, अरथुना के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक व रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में भक्तामर स्तोत्र पर कक्षा भी ली गयी। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

चित्तौड़गढ (राज.) : यहाँ पण्डित प्रवेशकुमारजी भारिल्ल, करेली के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार व रात्रि में दशलक्षण पर्व पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में त्रिलोकसार पर प्रौढकक्षा व पंचमेरू विधान का आयोजन किया गया। बालकक्षा व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **ह्न चांदमलजी जैन**

बरेली (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित नीतेशजी जैन द्वारा तीनों समय प्रवचनों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

जसवन्तनगर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित कमलकुमारजी मल्हैया के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र तथा रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

मोहोल (महा.) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर के प्रात: देव-शास्त्र-गुरु पूजा व दशधर्म, दोपहर में भक्तामर स्तोत्र व रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये।

वैराग्य समाचार

1. **आगरा निवासी** श्री सुरेशचन्दजी सकारिया का अक्टूबर, 05 में शांतपरिणामपूर्वक देहावसान हो गया। आप पण्डित प्रकाशचन्दजी 'ज्योतिर्विद' मैनपुरी के लघु भ्राता थे। साथ ही धर्मनिष्ठ व मधुरभाषी थे। आपकी स्मृति में आपके पुत्र संजयजी एवं अमितजी द्वारा जैनपथप्रदर्शक को 501/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **मुम्बई-घाटकोपर निवासी** श्रीमती रमिलाबेन मगनलाल बोटादरा का 75 वर्ष की उम्र में दिनांक 19 सितम्बर, 05 को देहावसान हो गया। आप पूर्व में सोनगढ रहतीं थी तथा स्वाध्यायप्रिय एवं धर्मप्रेमी महिला थी।

दिवगंत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही मंगल भावना है।

दीपावली शुभ आई....

मंगल घड़ी ये आई, दीपावली शुभ आई ।।
महावीरजी मोक्ष पधारे जग के जीव अनेकों तारे ।
गौतम स्वामी ने तत्क्षण ही, केवल ज्योति जगाई ।।1।।
नहीं जलायें फुलझडी पटाखें, हिंसा से हम दूर रहेंगे।
गौतम गणधर जैसे बनेंगे, मन में मेरे भावना आई।।2।।

ह्न विराग शास्त्री, जबलपुर

पंचकल्याणक प्रचार रथ का प्रवर्तन

मदनगंज-किशनगढ (राज.) : यहाँ दिनांक १६ नवम्बर से २१ नवम्बर, २००५ तक आयोजित होनेवाले आगामी पंचकल्याणक का आमंत्रण देने हेतु प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के नेतृत्व में दिनांक २७ सितम्बर से २ अक्टूबर,०५ तक पंचकल्याणक प्रचार-रथ का प्रवर्तन किया गया। प्रचार रथ भीलवाड़ा, उदयपुर, बांसवाड़ा, चित्तौडगढ, अजमेर, रतलाम, विजयनगर, गुलाबपुरा, शहापुरा, बिजौलिया, बेगू, भीण्डर, लूंणदा, बल्लभनगर, कुरावड, सिंगोली तथा उदयपुर के विभिन्न उपनगर आदि में भ्रमण करता हुआ दिनांक २ अक्टूबर को किशनगढ वापिस आया। वहाँ हमीर कॉलोनी में श्री भागचन्दजी चौधरी परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री महावीर जिनालय के सामने प्रचार रथ का मंगल गीत गाकर भव्य स्वागत किया गया। उक्त २२ स्थानों पर साधर्मियों द्वारा रथ का अत्यन्त उत्साहपूर्वक भव्य स्वागत किया गया तथा सभी स्थानों से मुमुक्षुओं ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आत्म कल्याण की भावना से अधिक से अधिक संख्या में पधारने एवं धर्मलाभ लेने हेतु आश्वासन दिया।

इस अवसर पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के ११ स्थानों पर आध्यात्मिक व भक्ति परक प्रवचन हुये, जिससे महती धर्मप्रभावना हुई।

मूक जीवों की चीत्कार सुननेवाला कौन ? मानव होकर भी इतनी निर्दयता क्यों ?

- **क्या आपको जैन कहलाने का अधिकार है ?**
- **क्या आप भगवान महावीर को मानते हैं ?**
- **क्या आपके हृदय में करुणा है ?**
- **क्या आप मुनिराजों की वाणी पर श्रद्धा करते हैं ?**

यदि हाँ तो ह्न

- पटाखे फोडकर अनंत जीवों की हत्या करके आप क्या बताना चाहते हैं ?
- जीओ और जीने दो का अमर संदेश देनेवाले भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस पर हिंसा का ताण्डव मत करिये। हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों का मरण करने पर दया क्यों नहीं आती ?

जरा सोचिये ह्न पटाखे फोडने से क्या मिलेगा ?

१. अनंत निर्दोष जीवों की हत्या। **२. वायू प्रदूषण ।**
३. आग लगने से क्षति। **४. स्वास्थ्य हानि।**
५. करोड़ों रुपयों का नुकसान। **६. अनंत पाप का बंध।**
७. गंदगी का साम्राज्य। **८. आँखों पर बुरा असर।**
९. मुनिराजों के उपदेशों की अवहेलना। **१०. भगवान की वाणी का अपमान।**

क्या आप जानते हैं ? प्रतिवर्ष पटाखो से २ लाख लोग अपंग होते हैं, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष २०० करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान होता है, पटाखों से प्रतिवर्ष ७० हजार बच्चों के आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है, पटाखा फैक्ट्री के कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है।

अत: हमें ही सोचना है कि यह अहिंसा के सम्राट का निर्वाण महापर्व है या हिंसा के यमराज का ?

निवेदक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.) सर्वोदय, ७०२, फूटाताल जबलपुर-२ (म.प्र.)

किशनगढ पंचकल्याणक पत्रिका

किशनगढ पंचकल्याणक पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

8 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर प्रारंभ

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित आठवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन गुरुवार, दिनांक 6 अक्टूबर, 2005 को श्री निहालचन्दजी ओसवाल, जयपुर के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन नीरू कैमिकल्स दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महीपालजी बांसवाड़ा एवं श्री जगनमलजी सेठी इम्फाल उपस्थित थे। साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

उद्घाटन सभा के पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन से हुआ, तत्पश्चात् श्री महेन्द्रभाई भालाणी परिवार मुम्बई द्वारा झण्डारोहण किया गया। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में वर्तमान में शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। आपके अतिरिक्त श्री निहालचन्दजी ओसवाल, श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, श्री महीपालजी, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी एवं श्री एस.नवलगुंद ने भी सभा को सम्बोधित किया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती मीना-अनूप शाह मुम्बई, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, डॉ. संजयकुमारज राजीवकुमार सुपुत्र श्री शिखरचन्दजी सर्राफ विदिशा तथा स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी पाटनी एवं सुपुत्र श्री अशोककुमार पाटनी कोलकाता को पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

नोट – विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रतिभा सम्मान

निवाई (टोंक-राज.) : यहाँ दिनांक 4 अक्टूबर, 2005 को सकल दिगम्बर जैन समाज निवाई-टोंक द्वारा नितिन जैन, सेमारी को 12 वीं कक्षा में वरियता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करनेपर तथा 10 वीं कक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले विनीत जैन, मिथुन पुदाली, श्रीकान्त जैन, प्रकाश उखलकर व सौरभ जैन को जयपुर के न्यायाधिपति श्री नरेन्द्रजी जैन तथा श्री निर्मलजी गोधा व श्री महेन्द्रजी गंगवाल के करकमलों से मैडल, प्रशस्तिपत्र व अन्य उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। वर्तमान में उक्त समस्त छात्र श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं।

आप सभी को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

ध्यान दें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन रात्रि 10.20 से 10.40 बजे तक प्रसारित हो रहे हैं। प्रसारण में किसी वजह से 5-7 मिनिट की देर भी हो सकती है।

यदि निर्धारित समय से 10 मिनिट बाद तक भी प्रवचन प्रारंभ नहीं हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 या (0141) 2705581 नं. पर सम्पर्क करें।

संक्षिप्त समाचार

✻ श्री दि. जैन तेरापंथी गोठ बड़ा मन्दिर बड़नगर में 2 अक्टूबर, 05 को गांधी जयंती के दिन गिरनारजी पर अनधिकृत कब्जा करने के विरोध में भक्तामर स्तोत्र का अखण्ड पाठ किया गया।

✻ पाकिस्तान और जम्मू-कश्मीर में आये भूकंप के कारण लगभग 30 हजार जानें गई तथा 1 लाख से अधिक लोग बेघर हुये। उत्तर भारत में अन्य भी कई स्थानों पर भूकम्प के झटके।

✻ आस्ट्रेलिया ने विश्व एकादश को वन डे में 3-0 से पराजित किया।

सत्साहित्य निःशुल्क मंगा लें

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल विरचित ह्न **१)** बारहभावना : एक अनुशीलन (मूल्य : १२ रुपये, पृष्ठ-१८०) **२)** समयसार का सार (मूल्य : २५ रुपये, पृष्ठ-४००) **३)** प्रवचनसार का सार (मूल्य : ३० रुपये, पृष्ठ-४०८) **४)** प्रवचनसार एक अनुशीलन (मूल्य : ३० रुपये, पृष्ठ - ४४६) **५)** रक्षाबन्धन एवं दीपावली (मूल्य : ५ रुपये, पृष्ठ-४८) का सेट स्वर्गीय श्रीमती पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री विपुलभाई मोटाणी एवं श्री हितेनभाई मोटाणी की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, वाचनालयों एवं सद्गृहस्थों को स्वाध्यायार्थ निःशुल्क भेंट किया जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव डाक खर्च के लिये २५/-(पच्चीस रुपये मात्र) के डाक टिकिट निम्न पते पर भेजकर सत्साहित्य निःशुल्क मंगा लेवें। हमारे कार्यालय से हाथों-हाथ प्राप्त करनेवाले महानुभावों को टिकिट देने की आवश्यकता नहीं है। **ध्यान रहे, टिकिट भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर, २००५ है।**

पता ह्न प्रबन्धक, निःशुल्क सत्साहित्य वितरण विभाग
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४ बापूनगर,
जयपुर-३०२०१५ (राज.)

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (द्वितीय)2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शनतथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127